शासकीय महात्मा गांधी स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इटारसी

एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार संगोष्ठी

कार्यक्रम – 14 दिसम्बर 2022

भारत का विभाजन : वेदना एवं संवेदना

आयोजक- इतिहास विभाग

वर्ल्ड बैंक परियोजना द्वारा वित्त पोषित

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के सहयोग से

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की परिणति भारत की स्वतंत्रता के साथ-साथ भारत के विभाजन के रूप में भी हुई जिसमें लाखों लोगों की नृशंस हत्याएं हुईं। भारत का विभाजन अभूतपूर्व मानव विस्थापन और पलायन की दर्दनाक कहानी है । सांप्रदायिक आधार पर एक हिंसक विभाजन की कहानी के अतिरिक्त इस बात की भी कहानी है कि कैसे एक समान जीवन शैली तथा वर्षों पुराने सह-अस्तित्व का युग अचानक और अविश्वसनीय रूप से समाप्त हो गया और 14 अगस्त 1947 को भारत के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों को मिलाकर एक पृथक देश पाकिस्तान का निर्माण हो गया।

विश्व में यह एकमात्र ऐसा उदाहरण है जब करोड़ों की जनसंख्या का विनिमय बिना किसी योजना एवं पूर्व प्रबंधों के अचानक कर दिया गया। पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित दंगों में लाखों लोग मारे गए और लगभग 1.5 करोड़ लोग विस्थापित हुए । विभाजन का यह काला अध्याय विस्थापित हुए, भगाए गए, मारे गए और भटक कर मौत को गले लगाने वाली मनुष्यता के खून के छींटे से भरा हुआ है। यह भारतीय इतिहास के चेहरे पर पुती हुई वह कालिमा है, जिसे कभी साफ नहीं किया जा सकेगा। इसका दंश इस पीढ़ी ने झेला,पर उसका दर्द और मार वहां से विस्थापित हुए परिवार आज भी झेल रहे हैं।

आज हमारा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, तब ऐसी स्थिति में यह भी आवश्यक हो जाता है कि हमनें एक राष्ट्र के रूप में इसकी क्या कीमत चुकाई है । संभवतः इसीलिए वर्तमान की भारत सरकार ने 14 अगस्त को "**विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस**" के रूप में मनाने का निर्णय किया। सिरिल रेडक्लिफ द्वारा खींची गई विभाजक रेखा ने उथल पुथल मचा दिया । जिन लोगों ने एक साथ आजादी का स्वप्न देखा था, वे एक दूसरे को मारने-मरने पर तत्पर हो उठे। वस्तुतः देश का विभाजन कट्टरपंथी सोच ने किया, परंतु चिंता की बात यह है कि यह सोच अभी भी जिंदा है। इसलिए खतरा भी बना हुआ । अतः शोध संगोष्ठी का यह विषय बौद्धिक विमर्श के लिए अत्यंत समीचीन है।

"जब कभी सियासी हाथों में मजहब का दुधारा आता है
मादरे वतन के सीने पर एक जख्म और लग जाता है"

उपशीर्षक

1.क्या भारत का विभाजन अपरिहार्य था ?

2. किन उपायों से इस त्रासदी से बचा जा सकता था ?

3.विभाजन की त्रासदी की संभावनाओं को जीवित रखने का क्या औचित्य है ?

4.विभाजन में किसकी अथवा किन संगठनों की मुख्य भूमिका थी ?

5.भारत विभाजन के दूरगामी परिणाम।

6. विभाजन के पश्चात विस्थापन और जीविकोपार्जन।

7. विभाजन के दौरान हुई व्यापक हिंसा एवं सुरक्षा प्रबंधन।

8.विभाजन के क्षेत्रीय आयाम : पंजाब और बंगाल ।

पंजीयन शुल्क

शिक्षक / शोध छात्र – 200 रुपया मात्र

Name- Principal GovtMGMPG College Itarsi
Account No-50501352156
IFSC Code-IDIB000I543
Branch- Indian Bank Itarsi

मुख्य विषय सहित अंतर्विषयी शीर्षक पर सारांश हिंदी/अंग्रेजी में आमंत्रित होंगे। शोध सारांश 300 से 500 शब्द शब्दों में प्रेषित करना अपेक्षित है। शोध सारांश A- 4 साइज में हिंदी कृतिदेव. 010 फोंट साइज - 14, अंग्रेजी में Time New Roman फोंट साइज - 12 एवं लाईन स्पेस - 1.5 में हो। शोध सारांश प्रेषित करने की अंतिम तिथि 30 नवंबर 2022 है।

संरक्षक : प्राचार्य डॉ राकेश मेहता
संयोजक : डॉ ओ. पी . शर्मा
सह संयोजक : डॉ लक्ष्मी ठाकुर
सचिव: डॉ असुंता कुजूर
विश्वबैंक परियोजना प्रभारी : डॉ. अरविंद कुमार शर्मा
IQAC प्रभारी : डॉ. पी. के. अग्रवाल

परामर्शदात्री समीति

डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल (ओ. एस . डी., उच्च शिक्षा विभाग भोपाल म. प्र.)
डॉ. मथुरा प्रसाद (अतिरिक्त संचालक, नर्मदापुरम संभाग, उच्च शिक्षा विभाग भोपाल म. प्र.)
डॉ कामिनी जैन, प्राचार्य, (शा.अग्रणी गृह विज्ञान महाविद्यालय नर्मदापुरम)
डॉ. ओ. एन. चौबे प्राचार्य, (शा.नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नर्मदापुरम)
डॉ. राकेश तिवारी, प्राचार्य, (शा. जे. एच. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल)
डॉ. पी. एन. सिंह, प्राध्यापक, (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश)
डॉ . हंसा व्यास (प्राध्यापक, शा. नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नर्मदापुरम)

पंजीयन – सुबह 10 बजे से

उद्घाटन सत्र – 11 बजे

प्रथम तकनिकी सत्र – 12 बजे

द्वितीय तकनिकी सत्र – 2 बजे

समापन सत्र – 3 बजे

सम्पर्क नम्बर : 9926493224,9406953898,7999568316

रजिस्ट्रेशन लिंक :
https://forms.gle/KSbjPP2pyaG4sdUA7

ऑनलाइन शोध सारांश प्रस्तुत करने का लिंक :
omprakash20153@gmail.com

गूगल मीट लिंक : https://meet.google.com/wqn-piap-hju

whatsup समूह से जुड़ने की लिंक :
https://chat.whatsapp.com/LZ23YUsL5rc7Cw9X8NCqpG